वर्ष 10, अंक 110

सहयोग शुल्क : रु.1 / मार्च 2026

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी

मंगल प्रवेश
एक सशक्त कदम

"दिव्यांग मेरे लिए सेवा नहीं, साधना हैं—उनका आत्मसम्मान ही मेरा संकल्प है।"

(प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी)

"दिव्यांगों की क्षमता पर देश को गर्व है—उनका सशक्तिकरण मेरा संकल्प है।"

(माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी)

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रलपाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटी से असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदनपत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाणपत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाणपत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाणपत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका
मार्च – 2026, पृष्ठ संख्या – 16
वर्ष – 10 | अंक – 110

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦
मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी

✦ सह-संपादक ✦
मिहिरभाई शाह
मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦
सेवा समर्पण फाउन्डेशन
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट(NGO)

Trust Reg. No.: E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,
अन्नपूर्णा पार्टी प्लॉट के सामने, नया
विकासगृह रोड, पालडी,
अहमदाबाद - ३८०००७

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦
प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.
आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6
Phone : 079 26405200

संपादकीय

आज का समय तेज बदलावों का समय है। तकनीकी, प्रतिस्पर्धा और बढ़ती अपेक्षाओं के बीच इंसान अक्सर मानसिक दबाव, असंतोष और अकेलेपन से जूझता दिखाई देता है। ऐसे में सबसे अधिक ज़रूरत है सकारात्मक सोच, धैर्य और मानवता से भरे वातावरण की। जीवन में कठिनाइयाँ आना असामान्य नहीं है, परंतु उन कठिनाइयों का अवसर में बदल देना ही सच्ची सफलता है।

विशेष रूप से दिव्यांगजन हमारे समाज के प्रेरणास्त्रोत हैं, जो सीमाओं के बावजूद अद्भुत साहस और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि शारीरिक सीमाएँ कभी भी मन की शक्ति को रोक नहीं सकतीं। उनके संघर्ष, परिश्रम और उपलब्धियाँ यह सिद्ध करती हैं कि इच्छाशक्ति सबसे बड़ी ताकत है।

समाज का कर्तव्य केवल सहानुभूति दिखाना नहीं, बल्कि समान अवसर प्रदान करना है। शिक्षा, रोजगार, खेल, कला और तकनीक—हर क्षेत्र में समावेशी सोच विकसित करना समय की मांग है। जब हम किसी को आगे बढ़ने का अवसर देते हैं, तो हम केवल एक व्यक्ति की मदद नहीं करते, बल्कि पूरे समाज को सशक्त बनाते है।

आज आवश्यकता है कि हम भेदभाव की दीवारें गिराएँ और सहयोग का हाथ बढ़ाएँ। छोटी-सी मदद, प्रोत्साहन का एक शब्द, या संवेदनशील व्यवहार किसी के जीवन की दिशा बदल सकता है। सकारात्मकता का वातावरण ही आत्मनिर्भरता को जन्म देता है, और आत्मनिर्भरता ही सफलता की पहली सीढ़ी है।

आइए, हम सब मिलकर ऐसा समाज बनाएँ जहाँ हर व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार पहचान और सम्मान मिले। यही सच्ची मानवता है, यही प्रगति का मार्ग है, और यही हमारे उज्ज्वल भविष्य की नींव है।

दिव्यांग सहारा योजना: आत्मनिर्भरता की ओर एक सशक्त कदम

भारत में दिव्यांगजन समाज का एक महत्वपूर्ण और अभिन्न हिस्सा हैं। उनकी क्षमताओं को पहचानकर उन्हें सम्मानजनक और आत्मनिर्भर जीवन प्रदान करना सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी रही है। इसी दिशा में निरंतर प्रयासों के तहत विभिन्न योजनाएँ लागू की जा रही हैं, जो दिव्यांगजनों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सहायक हैं। इन्हीं प्रयासों में दिव्यांग सहारा योजना एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य दिव्यांगजनों को आवश्यक सहायक उपकरण उपलब्ध कराना और प्रधानमंत्री दिव्यांग केंद्रों को सुदृढ़ बनाना है, ताकि वे दैनिक जीवन की गतिविधियों में अधिक स्वतंत्र और सक्षम बन सकें।

यह योजना शिक्षा, रोजगार और सामाजिक सहभागिता के क्षेत्र में दिव्यांगजनों की भागीदारी बढ़ाने पर भी केंद्रित है। सहायक उपकरणों की उपलब्धता से उनकी गतिशीलता और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, जिससे वे मुख्यधारा में अपनी सक्रिय भूमिका निभा पाते हैं। देश में बड़ी संख्या में ऐसे दिव्यांगजन आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण व्हीलचेयर, कृत्रिम अंग, श्रवण यंत्र और ब्रेल उपकरण जैसे आवश्यक साधन प्राप्त नहीं कर पाते, जिससे उनके लिए शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्र जीवन चुनौतीपूर्ण हो जाता है। दिव्यांग सहारा योजना का उद्देश्य इसी कमी को दूर कर प्रत्येक जरूरतमंद दिव्यांग व्यक्ति को उसकी अक्षमता के अनुरूप सहायता प्रदान करना है, ताकि वे आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन की दिशा में आगे बढ़ सकें।

वोइस टू दिव्यांग

दिव्यांग सहारा योजना में विभिन्न सहायक उपकरण प्रदान

इस योजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- दिव्यांगजनों को आधुनिक और गुणवत्तापूर्ण सहायक उपकरण उपलब्ध कराना
- प्रधानमंत्री दिव्यांग केंद्रों (PMDK) को बुनियादी ढांचे और तकनीक के स्तर पर सशक्त बनाना
- दिव्यांगजनों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाना
- शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार में उनकी भागीदारी बढ़ाना
- समाज में दिव्यांगजनों के प्रति सम्मान और समावेशी

इन उपकरणों का चयन विशेषज्ञों द्वारा लाभार्थी की आवश्यकता और दिव्यांगता के स्तर के अनुसार किया जाता है।

प्रधानमंत्री दिव्यांग केंद्रों की भूमिका

- मैनुअल और मोटराइज्ड व्हीलचेयर
- कृत्रिम हाथ और पैर
- बैसाखी, वॉकर और अन्य सहायक चलने के उपकरण
- श्रवण बाधितों के लिए हियरिंग एड और संबंधित उपकरण
- दृष्टिबाधितों के लिए ब्रेल किट, स्मार्ट केन और डिजिटल रीडिंग डिवाइस
- बौद्धिक एवं मानसिक दिव्यांगजनों के लिए विशेष

प्रधानमंत्री दिव्यांग केंद्र इस योजना का क्रियान्वयन केंद्र बिंदु हैं। इन केंद्रों के माध्यम से:

- दिव्यांगजनों का पंजीकरण और मूल्यांकन किया जाता है
- सहायक उपकरणों का वितरण और फिटिंग की जाती है
- फिजियोथेरेपी, काउंसलिंग और मार्गदर्शन सेवाएँ दी जाती हैं
- उपकरणों की मरम्मत और प्रतिस्थापन की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है

दिव्यांग सहारा योजना के तहत इन केंद्रों को आधुनिक मशीनों, प्रशिक्षित स्टाफ और डिजिटल प्रणालियों से सुसज्जित करने पर जोर दिया जाता है।

केंद्रीय बजट 2026 में दिव्यांगजनों के कल्याण और सशक्तिकरण पर विशेष जोर दिया गया है। बजट में सहायक उपकरणों की उपलब्धता और प्रधानमंत्री दिव्यांग केंद्रों को मजबूत करने के लिए अतिरिक्त संसाधनों का प्रावधान किया गया है। ये प्रावधान दिव्यांग सहारा जैसी योजनाओं को गति देकर अधिक से अधिक दिव्यांगजनों तक सहायता पहुँचाने में सहायक होंगे।

पात्रता और आवेदन प्रक्रिया

इस योजना का लाभ वैध दिव्यांगता प्रमाण पत्र रखने वाले आर्थिक रूप से कमजोर दिव्यांगजन उठा सकते हैं। आवेदन के लिए नजदीकी प्रधानमंत्री दिव्यांग केंद्र या संबंधित सरकारी विभाग के माध्यम से सरल प्रक्रिया अपनाई जा सकती है।

योजना के लाभ और प्रभाव

दिव्यांग सहारा योजना से दिव्यांगजनों के जीवन में सकारात्मक बदलाव देखने को मिलता है। सहायक उपकरण मिलने से वे:

- दैनिक कार्य स्वयं कर पाते हैं
- शिक्षा और रोजगार के अवसरों से जुड़ते हैं
- आत्मविश्वास और आत्मसम्मान महसूस करते हैं
- परिवार और समाज पर निर्भरता कम करते हैं

वोइस टू दिव्यांग

समावेशी भारत की ओर 'सुगम्य यात्रा' की पहल

मध्य प्रदेश के दतिया जिले में 10 मार्च को आयोजित होने वाला 'सुगम्य यात्रा' कार्यक्रम दिव्यांगजनों के लिए सुलभ, सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। इस पहल का उद्देश्य सरकारी भवनों, सिनेमाघरों और अन्य सार्वजनिक स्थलों तक दिव्यांग व्यक्तियों की आसान व बाधारहित पहुंच को परखना और सुधारना है। यह कार्यक्रम सुगम्य भारत अभियान की भावना को स्थानीय स्तर पर मजबूत करते हुए समाज में समावेशिता का संदेश देगा। कार्यक्रम के दौरान व्हीलचेयर उपयोगकर्ताओं, दृष्टिबाधित और श्रवण बाधित व्यक्तियों द्वारा सार्वजनिक स्थलों का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया जाएगा, जिससे रैंप की कमी, संकरे रास्ते, दिव्यांग अनुकूल शौचालयों का अभाव और ब्रेल संकेतकों जैसी व्यावहारिक चुनौतियाँ सामने आ सकेंगी।

संवाद, जागरूकता और ठोस सुधार की दिशा में प्रयास

'सुगम्य यात्रा' केवल निरीक्षण तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि संवाद और समाधान की प्रक्रिया को भी आगे बढ़ाएगी। दिव्यांगजन अपने अनुभव साझा करेंगे और प्रशासन, सामाजिक संगठनों तथा जनप्रतिनिधियों के साथ मौके पर ही चर्चा कर समस्याओं के समाधान पर जोर दिया जाएगा। सही ढलान वाले रैंप, लिफ्ट में ऑडियो अनाउंसमेंट, सिनेमाघरों में व्हीलचेयर सीटिंग और स्पष्ट संकेतकों जैसी सुविधाएँ उनकी आत्मनिर्भरता व सम्मान को बढ़ाने में सहायक होंगी। कार्यक्रम में यह भी रेखांकित किया जाएगा कि सुगम्य वातावरण का निर्माण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग की सहभागिता से ही संभव है। 'दिव्यांग सेतु' जैसे मंचों के सहयोग से यह पहल दिव्यांगजनों को अधिकारों से युक्त समान नागरिक के रूप में स्थापित करते हुए एक सशक्त, संवेदनशील और समावेशी भारत के निर्माण की दिशा में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करेगी।

सपनों को सहारा, रोजगार का रास्ता: मधेपुरा का प्रेरक प्रयास

11 मार्च को मधेपुरा के संयुक्त श्रम भवन में आयोजित होने वाला नियोजन सहायता कैंप एवं सेमिनार दिव्यांगजनों को रोजगार, स्वरोजगार और कौशल विकास के अवसरों से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल होगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बेरोजगार दिव्यांग युवक-युवतियों को उनकी योग्यता और कौशल के अनुसार उपयुक्त रोजगार उपलब्ध कराना, जानकारी की कमी और मार्गदर्शन के अभाव जैसी बाधाओं को दूर करना तथा सरकारी-निजी क्षेत्र की योजनाओं से जोड़ना है। कैंप के दौरान विभिन्न विभागों, रोजगार कार्यालय, श्रम विभाग और निजी प्रतिनिधियों की सहभागिता से पंजीकरण, कौशल आकलन और रोजगार विकल्पों से जोड़ने की प्रक्रिया पूरी की जाएगी, साथ ही स्वरोजगार योजनाओं, ऋण सुविधाओं और अनुदानों की जानकारी भी दी जाएगी।

सेमिनार इस कार्यक्रम का प्रमुख हिस्सा होगा, जिसमें विशेषज्ञ करियर मार्गदर्शन, इंटरव्यू तैयारी, कार्यस्थल पर अधिकारों, दिव्यांग अनुकूल कानूनों और आरक्षण व्यवस्था पर जागरूकता बढ़ाएंगे। कार्यक्रम में दिव्यांगजनों और अधिकारियों के बीच संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं व अपेक्षाओं को समझा जाएगा, जबकि सफल दिव्यांग उद्यमियों के अनुभव प्रतिभागियों के लिए प्रेरणा बनेंगे। यह पहल प्रशासन, नियोक्ताओं और समाज को यह संदेश देगी कि दिव्यांगजनों को रोजगार देना दया नहीं, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी है। ऐसे प्रयास 'दिव्यांग सेतु' जैसे मंचों के सहयोग से दिव्यांगजनों में आत्मविश्वास, जागरूकता और आत्मनिर्भरता बढ़ाते हुए एक सशक्त, समावेशी और विकसित भारत के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

अदाणी मंगल सेवा : दिव्यांग महिलाओं की नई पहचान

5 फ़रवरी 2026 को अहमदाबाद में आयोजित कार्यक्रम के साथ अदाणी मंगल सेवा ने अपनी पहली वर्षगांठ मनाई, जो दिव्यांग महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई। दीवा अदाणी और जीत अदाणी की उपस्थिति में आयोजित इस समारोह में पहल की एक वर्ष की उपलब्धियों और उसके सकारात्मक सामाजिक प्रभाव को साझा किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य नवविवाहित दिव्यांग महिलाओं को दीर्घकालिक आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना रहा, जिसे पहले ही वर्ष में 500 लाभार्थियों को ₹10 लाख की फिक्स्ड डिपॉज़िट देकर सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

यह आर्थिक सहायता महिलाओं के लिए केवल वित्तीय सहयोग नहीं, बल्कि सम्मान, आत्मविश्वास और सुरक्षित भविष्य का आधार बनी। लाभार्थियों ने बताया कि इस सहयोग से वे शिक्षा जारी रखने, स्वास्थ्य जरूरतें पूरी करने, छोटे व्यवसाय शुरू करने और भविष्य की बेहतर योजना बनाने में सक्षम हुईं। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं की प्रेरक कहानियां साझा की गईं, जिनसे स्पष्ट हुआ कि आर्थिक स्थिरता ने उनकी आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत किया।

अदाणी मंगल सेवा ने CSR के प्रभावी मॉडल के रूप में यह संदेश दिया कि दिव्यांग महिलाएं सहानुभूति नहीं, बल्कि समान अवसर और अधिकार की हकदार हैं। दीवा अदाणी और जीत अदाणी के नेतृत्व में यह पहल आर्थिक सहायता से आगे बढ़कर गरिमा, सम्मान और समावेशिता पर केंद्रित रही। पहली वर्षगांठ का यह आयोजन आशा और परिवर्तन का प्रतीक बनकर सामने आया, जिसने यह सिद्ध किया कि संवेदनशील दृष्टिकोण और ठोस योजना के माध्यम से समाज में स्थायी सकारात्मक बदलाव संभव है।

वोइस टू दिव्यांग

अंधेरे से उजाले तक: कार्लोस मोरेनो की प्रेरक सफलता गाथा

दुनिया में दिव्यांगजनों की सफलता की कहानियाँ केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं होतीं, बल्कि समाज के लिए प्रेरणा और उम्मीद का संदेश बन जाती हैं। ऐसी ही प्रेरक कहानी स्पेन में जन्मे दृष्टिबाधित युवा कार्लोस मोरेनो की है, जिन्होंने आधुनिक तकनीक की मदद से सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनकर यह साबित कर दिया कि दिव्यांगता सपनों की उड़ान को रोक नहीं सकती। जन्म से दृष्टिबाधित होने के कारण उनके माता-पिता और शिक्षक शुरुआत में उनके भविष्य को लेकर चिंतित थे, क्योंकि उस समय शिक्षा में सहायक तकनीकें सीमित थीं। फिर भी कार्लोस ने अपनी परिस्थिति को कमजोरी नहीं, बल्कि प्रेरणा बनाया और आत्मनिर्भर बनने का संकल्प लिया।

कार्लोस के जीवन में निर्णायक मोड़ तब आया जब उन्होंने स्क्रीन रीडर तकनीक, ब्रेल लिपि और डिजिटल ऑडियो टूल्स का उपयोग शुरू किया। इन साधनों ने उनके लिए शिक्षा के नए रास्ते खोले और कंप्यूटर साइंस के प्रति रुचि विकसित की। उच्च शिक्षा के दौरान उन्हें दिव्यांग-अनुकूल संसाधनों की कमी जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने ऑडियो फीडबैक, कीबोर्ड शॉर्टकट्स और विशेष डेवलपर टूल्स के माध्यम से कोडिंग सीखकर इन बाधाओं को पार किया।

मेहनत और लगन के साथ उन्होंने विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी की, जो अपने आप में एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। शिक्षा पूरी करने के बाद कार्लोस ने एक नहीं, बल्कि अवसरों की कमी होती है। यदि सही संसाधन और सहयोग मिले, तो दिव्यांगजन किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं।

आज कार्लोस मोरेनो विश्वभर के दिव्यांग युवाओं के लिए प्रेरणा बन चुके हैं। उनका यह कथन उनकी सोच को स्पष्ट करता है— “मेरी आंखें नहीं देख सकतीं, लेकिन मेरे सपने बिल्कुल साफ हैं।” उनकी यात्रा आत्मविश्वास, मेहनत और तकनीक की शक्ति का उदाहरण है, जो यह सिखाती है कि सही अवसर मिलने पर कोई भी बाधा सफलता के मार्ग में रुकावट नहीं बन सकती। ऐसी कहानियाँ समाज की सोच को सकारात्मक दिशा देती हैं और हर दिव्यांग व्यक्ति को यह विश्वास दिलाती हैं कि वह भी अपने सपनों को साकार कर सकता है।

वोइस टू दिव्यांग

हौसले की मिसाल: आयशा नकोंडे की आत्मनिर्भरता की प्रेरक यात्रा

तंज़ानिया की रहने वाली आयशा नकोंडे की कहानी साहस, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की अनूठी मिसाल है। एक सड़क दुर्घटना में अपने दोनों पैर खो देने के बाद उनका जीवन पूरी तरह बदल गया। शारीरिक पीड़ा के साथ-साथ समाज की दया और उपेक्षा ने उन्हें गहरे मानसिक संघर्ष में धकेल दिया, लेकिन आयशा ने हार मानने के बजाय खुद को फिर से खड़ा करने का संकल्प लिया। उन्होंने यह समझा कि यदि पैर साथ नहीं दे रहे, तो हाथ और हुनर उनकी नई ताकत बन सकते हैं। व्हीलचेयर पर रहते हुए आयशा ने सिलाई और हस्तशिल्प का काम सीखना शुरू किया। घर के एक छोटे से कोने से शुरू हुआ यह प्रयास धीरे-धीरे उनकी पहचान बन गया। पड़ोस से मिले छोटे ऑर्डर स्थानीय बाजार तक पहुँचे और उनके काम की गुणवत्ता ने उन्हें आर्थिक स्थिरता के साथ आत्मसम्मान भी लौटाया। सफलता मिलने पर आयशा ने अपने जैसे अन्य दिव्यांग महिलाओं के बारे में सोचा और अपने छोटे व्यवसाय को महिला स्व-रोजगार समूह में बदल दिया। आज वे कई दिव्यांग महिलाओं को सिलाई और हस्तशिल्प का प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनने में मदद कर रही हैं।

आयशा की उपलब्धियों ने उनके समुदाय की सोच को बदल दिया—जो लोग कभी उन्हें बोझ मानते थे, वही आज उनके कार्य की सराहना करते हैं। उनका संदेश सरल लेकिन प्रेरक है: "दुर्घटना ने मेरे पैर छीन लिए, लेकिन मेरा आत्मविश्वास नहीं।" उनकी कहानी यह सिद्ध करती है कि दिव्यांगता सीमाएं नहीं बनाती, बल्कि सही अवसर और हौसला मिलने पर वही व्यक्ति दूसरों के लिए प्रेरणा बन सकता है। आयशा नकोंडे की यह यात्रा न केवल व्यक्तिगत विजय की कहानी है, बल्कि यह उस विश्वास का प्रतीक है कि जब एक दिव्यांग महिला आत्मनिर्भर बनती है, तो वह पूरे समाज को सशक्त बनाती है।

भारत के प्रेरक दिव्यांग व्यक्तित्व

अरुणिमा सिन्हा

राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी अरुणिमा को एक हादसे में चलती ट्रेन से फेंक दिया गया, जिससे उनका एक पैर काटना पड़ा। लेकिन कृत्रिम पैर के सहारे कठिन प्रशिक्षण लेकर उन्होंने 2013 में माउंट एवरेस्ट फतह कर विश्व की पहली महिला दिव्यांग पर्वतारोही बनने का इतिहास रचा।

"ज़िंदगी में मुश्किलें रोकने नहीं, मजबूत बनाने आती

"ज़िंदगी में मुश्किलें रोकने नहीं, मजबूत बनाने आती हैं।"

"अगर आत्मविश्वास है, तो असंभव भी संभव बन जाता है।"

सुधा चंद्रन

भरतनाट्यम नृत्यांगना सुधा चंद्रन ने सड़क दुर्घटना में पैर खोने के बाद "जयपुर फुट" के सहारे दोबारा नृत्य शुरू किया और बाद में सफल अभिनेत्री बनीं।

"अगर आत्मविश्वास है,तो असंभव भी संभव बन जाता है।"

दीपा मलिक

रीढ़ की हड्डी में ट्यूमर के कारण कमर से नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। व्हीलचेयर पर रहते हुए भी उन्होंने खेलों में कदम रखा। 2016 पैरालंपिक में शॉट पुट में सिल्वर मेडल जीतकर इतिहास रचा। वे मोटरस्पोर्ट्स, तैराकी और सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय हैं।

"सीमाएँ शरीर में नहीं, सोच में होती हैं।"

भारत के प्रेरक दिव्यांग व्यक्तित्व

मरियप्पन थंगावेलु

बचपन में बस दुर्घटना में उनका पैर बुरी तरह घायल हुआ। गरीबी और शारीरिक चुनौती के बावजूद उन्होंने हाई जंप का अभ्यास जारी रखा। 2016 पैरालंपिक में गोल्ड मेडल जीतकर भारत का नाम रोशन किया।

"हालात चाहे जैसे हों, सपनों की ऊँचाई कम नहीं होनी चाहिए।"

देवेंद्र झाझरिया

बचपन में बिजली का करंट लगने से उनका एक हाथ कट गया। लेकिन उन्होंने भाला फेंक (जैवलिन) को अपना लक्ष्य बनाया। वे दो बार पैरालंपिक गोल्ड मेडल जीतने वाले पहले भारतीय बने।

"हौसले मजबूत हों, तो कमी भी ताकत बन जाती है।"

इरा सिंघल

शारीरिक दिव्यांगता के कारण कई बार नौकरी से वंचित रहीं। फिर भी उन्होंने UPSC की तैयारी जारी रखी और ऑल इंडिया रैंक 1 लाकर IAS बनीं। वे प्रशासनिक सेवा में प्रेरणा का उदाहरण हैं।उनकी सफलता यह साबित करती है कि दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास के सामने कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती।

"सपनों पर भरोसा रखो, दुनिया रास्ता देगी।"

संवेदनाओं से सशक्त समाज का निर्माण

आज का समय तेज़ बदलावों का समय है। तकनीक, प्रतिस्पर्धा और बढ़ती अपेक्षाओं के बीच इंसान अक्सर मानसिक दबाव, असंतोष और अकेलेपन से जूझता दिखाई देता है। ऐसे दौर में सबसे अधिक ज़रूरत है सकारात्मक सोच, धैर्य और मानवीय संवेदनाओं को जीवित रखने की। जीवन में कठिनाइयाँ आना असामान्य नहीं है, परंतु उन कठिनाइयों को अवसर में बदल देना ही सच्ची सफलता है। विशेष रूप से दिव्यांगजन हमारे समाज के वे प्रेरणास्त्रोत हैं, जो सीमाओं के बावजूद अद्भुत साहस और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि शारीरिक सीमाएँ कभी भी मन की शक्ति को रोक नहीं सकतीं। उनके संघर्ष, परिश्रम और उपलब्धियाँ यह सिद्ध करती हैं कि इच्छाशक्ति सबसे बड़ी ताकत है।

समाज का कर्तव्य केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि हर व्यक्ति को समान अवसर देना है। शिक्षा, रोजगार, खेल और तकनीक जैसे सभी क्षेत्रों में समावेशी सोच विकसित करना समय की आवश्यकता है। छोटा-सा सहयोग, प्रोत्साहन का एक शब्द या संवेदनशील व्यवहार किसी के जीवन की दिशा बदल सकता है। सकारात्मक वातावरण आत्मविश्वास को जन्म देता है, और यही सफलता की पहली सीढ़ी है। आइए, हम मिलकर ऐसा समाज बनाएं जहाँ हर व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार सम्मान और पहचान मिले—यही सच्ची मानवता और उज्ज्वल भविष्य की नींव है।

सुगम्य भारत' और 'आत्मनिर्भर भारत' को बल

बजट आवंटन और महत्व

Artificial Limbs Manufacturing Corporation of India (ALIMCO)** दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण उपलब्ध कराने वाली एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई है, जो **सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय** के अधीन कार्य करती है। केंद्रीय बजट 2026-27 में ALIMCO को ₹143 करोड़ का आवंटन किया गया है, जो सरकार की दिव्यांग सशक्तिकरण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

1972 में स्थापित ALIMCO का उद्देश्य किफायती और उच्च गुणवत्ता वाले कृत्रिम अंग, व्हीलचेयर, श्रवण यंत्र, स्मार्ट स्टिक और ब्रेल किट जैसे उपकरण उपलब्ध कराकर दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाना है। बजट वृद्धि से उत्पादन क्षमता बढ़ेगी, नई तकनीकों का उपयोग होगा, अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहन मिलेगा तथा ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच और मजबूत होगी।

इसके साथ ही, यह बढ़ा हुआ आवंटन वितरण प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी एवं प्रभावी बनाएगा, जिससे जरूरतमंद दिव्यांगजनों तक समय पर सहायता पहुंच सकेगी। यह कदम समावेशी विकास की दिशा में सरकार की दूरदर्शी सोच को भी मजबूत करता है।

प्रभाव, नवाचार और निष्कर्ष

ALIMCO द्वारा निर्मित सहायक उपकरण दिव्यांगजनों के जीवन को सरल बनाते हुए शिक्षा, रोजगार और सामाजिक सहभागिता के अवसर बढ़ाते हैं। बढ़े हुए बजट से अधिक वितरण शिविर आयोजित किए जा सकेंगे, जिससे आर्थिक रूप से कमजोर दिव्यांगजन भी निःशुल्क या रियायती उपकरण प्राप्त कर सकेंगे।

यह पहल समावेशी विकास और आत्मनिर्भरता को मजबूती देती है, साथ ही स्वदेशी निर्माण और रोजगार सृजन को भी बढ़ावा देती है। भविष्य में स्मार्ट प्रोस्थेटिक लिम्ब, उन्नत श्रवण यंत्र और मोबाइल-ऐप आधारित उपकरण जैसे तकनीकी नवाचार दिव्यांगजनों की कार्यक्षमता को और बेहतर बनाएंगे।

निष्कर्षतः, बजट 2026-27 में ALIMCO को मिला बढ़ा हुआ आवंटन लाखों दिव्यांगजनों के आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता को नई दिशा देगा तथा एक अधिक सुलभ, संवेदनशील और समावेशी भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

चकराता क्षेत्र में दिव्यांगों को सहायक उपकरण वितरित, आत्मनिर्भरता की ओर एक और कदम

देहरादून जनपद के चकराता क्षेत्र अंतर्गत कोटी-कनासर में समाज कल्याण विभाग द्वारा प्रधानमंत्री दिव्यांग केंद्र के माध्यम से एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र के दिव्यांगजनों को आवश्यक सहायक उपकरण उपलब्ध कराकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना तथा उनके दैनिक जीवन को अधिक सुगम और सुविधाजनक बनाना रहा।

शिविर के दौरान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से आए दिव्यांग लाभार्थियों को कुल 30 सहायक उपकरण वितरित किए गए। इनमें उनकी आवश्यकता के अनुसार चलने, सुनने और दैनिक कार्यों में सहायक उपकरण शामिल थे। उपकरण पाकर लाभार्थियों के चेहरे पर संतोष और आत्मविश्वास साफ झलक रहा था।

इस अवसर पर समाज कल्याण अधिकारी खजान सिंह ने बताया कि विभाग की यह पहल दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। उन्होंने कहा कि राज्य एवं केंद्र सरकार दिव्यांगजनों को हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने यह भी बताया कि समाज कल्याण विभाग द्वारा लगातार ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में ऐसे शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक पात्र लाभार्थियों तक सहायता पहुंचाई जा सके।

खजान सिंह ने कहा कि सहायक उपकरण दिव्यांगजनों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम बनते हैं, जिससे वे शिक्षा, रोजगार और सामाजिक गतिविधियों में बेहतर भागीदारी कर सकें। शिविर के दौरान विनोद, प्रशांत शर्मा सहित अन्य विभागीय प्रतिनिधि एवं स्थानीय लोग भी उपस्थित रहे।

आयोजन को क्षेत्रवासियों ने सराहा और भविष्य में भी ऐसे शिविरों की निरंतरता की अपेक्षा जताई।शिविर ने न केवल लाभार्थियों को सहूलियत प्रदान की, बल्कि समाज में समावेश और संवेदनशीलता का संदेश भी दिया। भविष्य में ऐसे प्रयास दिव्यांगजनों के आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता को और मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट संचालित

संचालित (N.G.O.)

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲ Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲ Sports Day Celebration
▲ Rakshabandhan Celebration ▲15th August Celebration ▲ Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर